

७९ नगाय कु 'नैटा न सुवा की नगाय कु 'ने मा हैश से र ग्री प्रेचेवा न न ।।

Commentary on the Great Commandment and Great Commission Dolpo Tibetan and English Edition.

English and Dolpo Tibetan copyright: ©Dolpo Tibetan, 2022 www.dolpotibetan.com

English Bible Portions provided by: *The New International Version*, Grand Rapids, MI: Zondervan, 2011

गाम् क्या

1.1 বল্ব কু ক প্ৰা 1.2 বল্ব কু ব্দ ব্য 1.3 বল্ব কু শঙ্গি যা 1.4 মদ্শ শ্ৰ্মা	
1.2 ব্যাব্যক্ত ব্রুম্বা 1.3 ব্যাব্যক্ত বৃষ্ট্রম্বা	.7
1.3 नगदमुन्ग्रेषया	
1.4 सहमार्थेसा	
	27
2.1 বশ্লুঝ'ঝ্'বশ্বশু	34
2.2 รุกุระสานาร์	
2.3 दें रे यो यहे व है। र कुम्बा	
2.4 ८ में में प्राणि में के प्राप्त के प्राप	
2.5 सह्या र्थेसा	

ት ፭ ፯ ፯ ፲ Introduction

स्थाने कि त्या स्थान स्

All of the scriptures in the Holy Bible are important. The Apostle Paul tells us that "All Scripture is God-breathed and is useful for teaching, rebuking, correcting and training in righteousness, so that the servant of God may be thoroughly equipped for every good work" (2 Timothy 3:16–17). In the New Testament Scriptures, there are two passages that followers of Jesus call the Great Commandment and the Great Commission. Both of these passages record the words of Jesus. Jesus taught about the greatest commandment to a crowd of people when one man asked him which commandment was most important.

¹ वे कें वे महिष्य 3:16-17

चीश्रायो निमातः कुः चेरः ने स्क्रीयः यो निम्नुयः यो अनुवन्तः यो अनुवन्तः विश्वायः यो स्टान् विश्वायः यो स्टान्यः यो स्टान् विश्वायः यो स्टान् विश्वायः यो स्टान् विश्वायः यो स्टान् विश्वायः यो स्टान् विश

The passage we call the Great Commission is the last words Jesus spoke to His remaining eleven disciples before returning to His Father in Heaven. Both of these passages are very important to followers of Jesus. We should know and understand these two teachings from Jesus, but most importantly, we should be obedient to the Great Commandment and the Great Commission.





पश्चर-रच-दे-श्र-पालय-प्रांच-हिन-श्चर्ण-विश्वर्ण

Like all Scripture, it is best to study these two passages with a group. This teaching is designed to be read and discussed with a small group. Please gather a small group together and read or listen to this teaching. Then, discuss the questions together. God's Holy Spirit can empower each of us to understand God's Scripture and share it with others.

नगातःकुःकेः विषा

The Great Commandment

1.1 Jesus was in the city of Jerusalem the week before He died on the cross. During that week, the Jewish religious leaders tried to trap Jesus in his words (Matthew 22:15). They wanted to accuse him of a serious crime and have him killed (Matthew 26:3-4). Many religious leaders were asking difficult questions hoping Jesus would make a mistake. One teacher of the religious law saw Jesus giving good answers to each of their questions. He then asked a question of his own:

¹ शेर् च्रु चेतु 22 छार 15

²² क्रेन्'ब्रू'येतु' **26** छाट' **3-4**

बर्गानेतु १२ षद २८-३४

नगतः विस्नाव दाव वाषा के विषा गुः क्री ना

में विष्यं में देव देव राष्ट्रिय राष वटःवर्गम्यात्यः के विषादे छि ध्येव मि चेव देश दी देग वटावरामायाळे विषादटार्या देवी हिर्चादमाँवा अर्ळमा वे मारीमाया महिमाया येदा दिया वे दित्रे हिंदे र्गेव अर्क्रवाधिव देव विद्याणी सन्दर्वे हिंदे दर्गेव अर्क्रवा से स्वा ल्तर्मश्रुयात्तर्भाष्ट्रियम् देत्रत्म स्वाप्त्रियम् स्वाप्त्रा स्वाप्त्रस्य स्वाप्त्रस्य स्वाप्त्रस्य स्वाप्त्रस्य स्वाप्त्रस्य स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्व ग्रैषास्ट मी स्ट तो मुदेषार्थ प्रश्नित है मान्य स्ट मी हिस्रास के बारे मुदेषार्थ मुन दे'गविषायषाम्याके'नार्केषाविष्यषाव्याये ये से से निष्य लट.कूथ.विश्वश्वात्रात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्रात्रा श्रीतार्त्रात्रा विट.ग्रीयावशिट्यात्रात्रात्रात्रात्र म् यो धेव देवा दर्गेव अर्केवा वे वा ठेवा अवा में वा वा वा वव अ केद देवा विद से रूट वी स्थान त्वाःथित्वाशुअःग्रीशःग्रुअशःत्रिः त्र्रिः त्र्ग्र्रः त्र्ग्रुतः क्रुः तृतः । त्रदः वीशः त्रदः योः वादेशः र्राः नगुर्दे रेंगावर् राया वियायळे राया चेरा रायग्रे मुंदे ही हितारीया देरा सुया अर्केन्याधानेतेव्यावर्षाक्षेत्रे के म्याधिव निवाके चेव व्याधाने निवा थे.विश्वःक्र्याविष्रयः यावयः पः देयः व्रें. ग्रेंयः पक्कुतः व्यायवः पश्चिष्ययः पे. देः येः विविष्ययः वि विगागीषा चटा थे शुः शे दे न्या रे माटा वदी सार्धे दायी देग

Mark 12:28-34

The Greatest Commandment

One of the teachers of the law came and heard them debating. Noticing that Jesus had given them a good answer, he asked him, "Of all the commandments, which is the most important?"

"The most important one," answered Jesus, "is this: 'Hear, O Israel: The Lord our God, the Lord is one. Love the Lord your God with all your heart and with all your soul and with all your mind and with all your strength.' The second is this: 'Love your neighbor as yourself.' There is no commandment greater than these."

"Well said, teacher," the man replied. "You are right in saying

that God is one and there is no other but him. To love him with all your heart, with all your understanding and with all your strength, and to love your neighbor as yourself is more important than all burnt offerings and sacrifices."

34 When Jesus saw that he had answered wisely, he said to him, "You are not far from the kingdom of God." And from then on no one dared ask him any more questions.



याट मी माश्रुट रच दे खे रळे दाद ट यो प्याप्त स्था हो या दे विषय हो स्था स्था हो या दे विषय हो स्था स्था हो स्था स्था हो स्था हो साथ है साथ हो साथ है साथ है

- 1. ग्रुट्र र्यादिवे व्यापे प्रमृत्र व्यक्ष्य मि में राये के क्रिया ग्री वित्र मार्गी
- 2. नगतः मुद्दि न नुभूताती नगतः मुत्दि गित्रेषा गुः देव नगरि धिव मी।
- 3. तुःगुःगुरुप्तात्मातः मुःवदेः तोः रुष्माः नुष्माने नुष्माने त्यमा त्येष्यमाने दामाने दामाने
- 4. नगतः कुति देशे शुले न मिन कुर्

यायाः श्रीन् श्रिन् ग्रीकाः यान् ने स्था क्षेत्र स्था स्थान स्यान स्थान स्थान

Read that scripture one more time together as a group. Then discuss these questions:

- 1. What does this Scripture teach about God?
- 2. What is the meaning of these two commandments?
- 3. How can you obey these commandments?
- 4. Who can you share these commandments with?

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 1.2.

नगाय: कु: ५८: द्या

The First Commandment

1.2 नगतः कु: दे: दी बेदः ह्या बरःगा त्यःगाः वदः त्ये दीषः वदः देगा गह्यदः स्वः वदेः गह्युबः ग्रेन्द्रिक्षर्द्रप्रद्राच्यातम् निर्मात्रेष्ठ्राक्ष्याः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् यःगुःर्नेवः दर्। हेर्ने द्र्ये द्र्ये व्यळेषा वे गरेषा या परिषय ये देषा विर वे द्वे दे हेर्ने द्र्ये द्र्ये व अर्क्रेमाधेत्रदेगाचेत्रमासुद्रात्रदिन्देग दःक्रेमादिन्गुःतेधेःश्रामासुद्रात्राद्रिःक्रेमामासरः मः सः देवा क्षेवा वदेः गुः वे ध्येः वृते सम् वत्वि स्वि स्वेतः वि दः धिदः धः दः प्रः दः प्रते से गुः गुर्वा स्व वर्षायेव न में दिन देव धेव वत्रा धे नुषाळेवा तरे वे धानु प्रति वाह्य र र न हिर प्रते वटाये दीबार्द्र प्यंत् क्षुव र्श्वेषाबाळेव र्रा दे रदायहण्या बाह्यद्रवा थे प्रवासी वाह्यद्रवा थे प्रवासी वाह्य यतेळेग्रान्ठर रे ले पार्र रायते स्नर स्वाव वर ले। वे या ने या द्यादेवी व्रवः कुरेटा यटावी ययायेव यहें टक्कुरें व येव देया यह दुः रागुः ग्रीश ळेंग्रान्ठर वरे तो शेखा चेत्र तेर देग है तो चेर हो। विंद गु.गी स्नूर खुग्रा तर तो ळेंग वर्र दर में धेव देग के अ ने में रेव दग दे वी केंबर दा धर वी वाग वेव हिंद ने म रे:दॅबःधेव:देग

1.2 The Great Commandment can be found in the Gospels of Matthew, Mark, and Luke. (Matthew 22:34-40, Mark 12:28-31, and Luke 10:25-28). In the three Gospels, the commandments are the same. In Mark's Gospel, he records Jesus answering the man by saying, "Hear, O Israel: The Lord our God, the Lord is one." These are not new words that Jesus is saying. The crowd around him was mostly Jewish people, and they knew these words very well. Jesus was quoting from a very famous scripture passage in the Jewish Scriptures that Christians call the Old Testament. The passage that Jesus was quoting from is called

¹ केर प्रृत्येतुः 22 छारः 34 क्षा 40 क्षरामुखेतुः 12 छारः 28 क्षा 31 छार तुः मुखेतुः 10 छारः 25 क्षा 28

क्रवायान्य निर्मात्र निर्मात्र विषयात्र निर्मात्र विषयात्र निर्मात्र निरम्भात्र निर्मात्र निर्म

the "Shema." Jewish people call this passage the Shema because the first word in their language is 'shema' which means "to listen or obey." For thousands of years, and even today, Jewish people recite these words in their daily prayers. To better understand what Jesus teaches in the Great Commandment, we can also study the Shema Passage in Deuteronomy 6:4-9.

Shema Israel

Hear, O Israel: The LORD our God, the LORD is one. Love the LORD your God with all your heart and with all your soul and with all your strength. These commandments that I give you today are to be on your hearts. Impress them on your children. Talk about them when you sit at home and when you walk along the road, when you lie down and when you get up. Tie them as symbols on your hands and bind them on your foreheads. Write them on the doorframes of your houses and your gates.

Read that scripture one more time together as a group, then discuss these questions:

- 1. What does this Scripture teach about God?
- 2. What does God ask his people to do?
- 3. How can you obey these commandments?
- 4. Who can you share this Scripture with?

मेवाधीक्षित्रामा

हिर धिक्षेत्र खेला सामु हिंद प्राम्य धिक्षेत्र प्राम्य धिक्षेत्र कि स्थित हिंदी विश्व कि वि

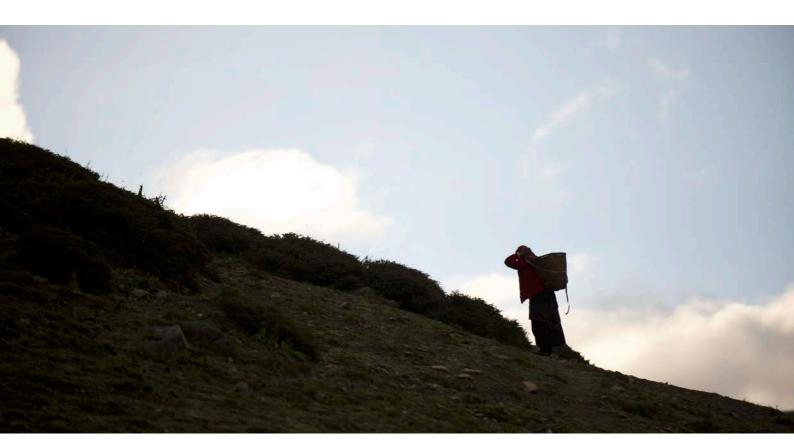
याट यो या शुट र न रे खे र बे र ते र यो श्री का ख्रु र खी का भी यो ते वा त्या र यो है । से स्वार के स्वार के स्व

- 1. ग्रुट्र र्या वर्षे वर
- 2. दर्गेव्यळेंग्योष्ट्रिर्या वीष्ट्रिर्या वीष्ट्रिर्या विष्ट्रिया विष्ट्रिया
- 3. तुःगुःगुरुषानमातः कुः तदेः योः देः मीः नुरुषः हेः यमाः योवः महिंदः कुः दि।
- 4. ब्रिंद्गीश्वाचगावः मुःवदे से सुः वे चर्षेद्र मुः दे।

थे नुषा हो दाये की राष्ट्रीया राणा देवादा है में दे दा गुणी दोने वाके वा धेवादेवा है में दे मरेग्यामिन्यायोद्दीम् दर्गेव्यायकेंग्वि हित्र् द्वयम्यायाये ह्वाव्येद्वाये प्रति द्वा सर्केगाधिव देग विंदा में बात है वात है वात दे दे दा। यद विदेश वद वो के विंद पेंद दे यो दे रे नर्गित्यावतः से देव वित्यो वावसायवे साळ वाठिया चत्यो त्र दे साचता सेवे सोसस्य यट म्वरास्माराये ने से अधिय म्वर कें स्टर्म मिट के माट से से पहें से दिन दें स चरा रवामारेटा क्षेणामवे त्या गावावका वर्षा वर्षा के देवा विटावे रवटा गावा वर्षा प्रेपा के प्राप्त रेवै हें में न्ग्रॅब अर्केया धेव नेया न्यर ग्यूव केंन् धेन न्ग्रॅब अर्केया या केश केंन् थेन र्दरचेता धासे विटारमा मुमार में तर सके वाधित देवा तुःगुःनर्गेद्वान्यद्वान्यव्यत्ते दिन्। तुःगुःभेःचुय्यान्यान्यद्वान्यव्यत्त्वान्तेषाः वद्वान्यव्यत्तेषाः वद्वान थे देवे पक्कु द दब कि विद्या के प्रमान के प्रम अर्क्रिणाये के वी प्रमाने प्रमान के प्रमान प्रम प्रमान प्र ये पुराया परिवास निवास के प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र देग (थॅ.२) बब जोते. 14 लट. 15)

Jesus begins the most important commandment: "Hear, O Israel: The Lord our God, the Lord is one." God is very great. He made the world and everything in it. God is present everywhere; he sees all people and knows everything. He depends on nothing and is holy and completely separated from sin. God has all power. Since there cannot be two gods who are each all-powerful, Yahweh God alone is God. Because Yahweh God is the only one God, who created and loves us, we must love Him with all that we are. How do we show our love and respect to God? Jesus said, "If you love me, keep my commands" (John 14:15).

That is what we read in Deuteronomy, too. God says, "Love the LORD your God with all your heart and with all your soul and with all your strength." God wants us to love him with our whole being, with everything we do, say, think, and dream about for the future. Then, in the next verse, God tells us how we love him by keeping God's commands in our hearts and minds.



वियाचेर रे क्षेम् या प्रतासी अण्णे क्षेप्र क्

In the Shema passage, we can see three important truths that are connected. First, Yahweh God is the only one God. Second, because He is the only God, we should love him. Third, to show our love to Him, we should obey His commands. In the same way that we love God with all of our heart, soul, and strength, we must obey God's commands in every area of our life. There is no way to keep a secret from God. He sees everything. That is why

God commands us to keep His commands in our hearts and teach them to our children. He wants us to talk about them when we sit inside our house and walk outside. His Word should be what we talk about when we lie down and when we get up. God's Word should fill our lives.

More importantly, we don't just think about and discuss God's commandments but obey them. God's Word should change how we work, play, and relax. It should change how we treat other people. That is why the Shema Scripture says we should tie God's commandments to our hands and foreheads. God's commandments should impact our work with our hands, where our eyes look, what our tongue says, and what our mind thinks. His Word changes our whole lifestyle.

द्रास्त्वाश्वास्त्रया द्रावाश्वास्त्रयाची स्वाप्त्रयाची स्वाप्त्ययाची स्वाप्त्रयाची स्वाप्ययाची स्वाप्त्ययाची स्वाप्त्ययाची स्वाप्त्ययाची स्वाप्त्ययाची स्व

यायःश्चितःग्रिमःत्रितःग्रीमःत्वतःश्चेः याळ्य वितः श्चेः याळ्य वितः याळ्य वितः श्चेः याळ्य वितः श्चेः याळ्य वितः याळ्य याळ्य वितः याळ्य याळ्य य

Finally, in writing God's Word on our gates and door frames, we are telling all who will hear that we are followers of God. To those who come to our house, we want them to know that God is King in our life; God is our King, and we obey His commandments. After reading the Shema Scripture, we can understand the first and most important commandment: we should love God and obey His Word.

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 1.3.

चगाय: कु: या ने रापा

The Second Commandment

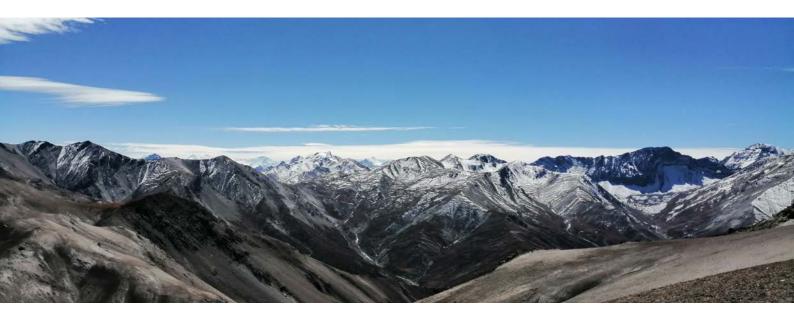
1.3 क्र्याचिश्रयायदे मिलेशक्षेत्र के क्षेत्र विश्व क्ष्याचिश्यया क्षेत्र मिल्या क्षेत्र मिल्या

1.3 The teacher of the law asked Jesus, "Of all the commandments, which is the most important?" Instead of answering with just one commandment, Jesus responds with two connected commandments. He said, "The second is this: 'Love your neighbor as yourself." Again Jesus is quoting from the Old Testament. These words come from Leviticus 19:18. Jesus brings these two commandments together from the Old Testament because these two commandments cannot be separated.

यातः क्रिल्यं स्वर्त्त क्रियं वर्ष्य वर्ष्य क्रियं वर्ष्य क्रियं क्रियं

(थ. २. वब. २८. म्. मुंचे १ वर्ष १ १ वर १ वर्ष १ वर्ष १ वर

In the Apostle John's letter, he writes, "We love because he first loved us. Whoever claims to love God yet hates a brother or sister is a liar. For whoever does not love their brother and sister, whom they have seen, cannot love God, whom they have not seen. And he has given us this command: Anyone who loves God must also love their brother and sister." (1 John 4:19-21)





ला. त्रीया क्षात्र क्ष्रीय क्ष्रा क्षेत्र क्ष्रीय क्ष

Jesus also talked about this when he gave this command to his disciples, "A new command I give you: Love one another. As I have loved you, so you must love one another. By this everyone will know that you are my disciples if you love one another." (John 13:34–35). Many times in the Bible, we find this commandment said in different ways, but what does it mean to love our neighbor?

णे. श्वारी विवाणे र अहीर मुला अवयाणे र में मुला अतो वर्षे मा ह्या र ह्या है विते गर्भे तुर्रे रियर इट पर्वेषाची यात्र विये रे येर पर्दे या परि हेषाये ह्या प गुःतुन्दे देग देवशङ्ग्राप्ते अर्केन्या तत्त्वा अपवन्ते विगायया दे नक्कुन्वश्यक्री यटायो भी प्रति हो हो न न क्या के प्रति क्या के प्रति का स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स्वाप के स चिषाने स्वरास्त्रीयाषावषास्त्र दे देवा धेव वतर। बास्यराध्यास्य से से से विवासिया दे पक्कित वयावर्गिः मु। वियासः श्रुवः पर्वेयापवेः वेः देः वर्षादिवेः त्यायार् स्वेत हे सामे सूयारे ट स्वायाय या का कटा सुमाया हे र या विया यो या पहाय या या चरा रटा में नर्षेव रादे में ट्या क्ष्या या तो नर्जें व कि राय दिया तो ति हो र कि राय है व राय क्किंट नियाना निया स्तार हुन हैं हिंदा र दिया में प्राप्त की प्राप्त की स्वाप्त की स्वाप यान्द्रित्रे विराधिः में याबाद्यादार्थे प्रश्चीद्रः में याबाशीय यावाशीदः द्वादादे वावद्रायाः नमयः र्से मिर्टिट्ट्र वे मासुवार्धे दे गुः वट् वयः हमा सः गुः गुवार्मे द्यार्थे वे विवा चग्रीन् अपवत् वे ने प्येव ने वा चेव लुबा से ने वा ने वबा थे नुबान हिंद रूट चट कुवाबा है ने र्रेमायर ग्रीस निमाने वा महारका दी दिमा (सु:गृ:सेतु:10ष्ट्राः 30 व्याः 37 व्रदःसे:च्रीयःदेर्-देग्)

In Luke's Gospel, the teacher of the law asks another question. He asks, "And who is my neighbor?"

In reply, Jesus said, "A man was going down from Jerusalem to Jericho when he was attacked by robbers. They stripped him of his clothes, beat him, and went away, leaving him half dead. A priest happened to be going down the same road, and when he saw the man, he passed by on the other side. So too, a Levite, when he came to the place and saw him, passed by on the other side. But a Samaritan, as he traveled, came where the man was; and when he saw him, he took pity on him. He went to him and bandaged his wounds, pouring on oil and wine. Then he put the man on his own donkey, brought him to an inn, and took care of him. The next day he took out two denarii and gave them to the innkeeper. 'Look after him,' he said, 'and when I return, I will reimburse you for any extra expense you may have.'

"Which of these three do you think was a neighbor to the man who fell into the hands of robbers?"

The expert in the law replied, "The one who had mercy on him." Jesus told him, "Go and do likewise." (Lk 10:30–37)



र्सूट्यिव्याये द्राणुर्याचे विष्णुर्याचे विष स्टायते वटा से ते देव के सम्मान के समान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के सम्मान के समान के सम्मान के समान के समा देवा धराम्हिम् देशिक्षे क्षे विवामी ही दिवाधिद देवा हार्केर पात्र तुवा हार्व मान्य यागुः भेः भूषाः क्रेंदः योः प्रचरः भेंदाः वेदाः क्रेंयाः योयाः ययः विषाः धेवः देः भेंयाः विद्याः प्रचेदः विद्य देव रे.जे.चेर.वे। विट.ग्र.ग्रे.जे.जर्गाने.वे.अर्केट.त.वर्चेल.क्रे.जर्मात्रेय क्रि.चं.च तर्ते भे के तिया यो यो गुर्गेषाचर । यो यावव देर यो तर् पावेषा धेव दे रे राज हेव चश्चेर देर देव विट गु.गी क्षें विवा वी चक्कुर या क्षाय क्रिट सक्षें या विद्या स्वा विश्व क्षें विवा वी विक्र क्षे च्रीन् मुंग् भूनम् वर्षे वर्षे क्रिंग् के वर्षे वरते वर्षे व चक्कृत्रप्रादेद्रादेव यद्या महास्राध्या देवी सास्राध्या सुद्राप्य स्वर्धित देव दुर्बा देवी स क्षेत्र खोवा प्रवेशिया ग्रीका का वारा प्रायुक्त प्रवेशिया की दर्भे वा विक्रिया विक्रिया विक्र अपवर दी से वियाधिव दे दें रायहें व प्रीट केंद्र देय

In the story, we read about a man going from Jerusalem to Jericho. Both of these cities are in Israel. The man who was traveling was probably a Jewish man. After the man was attacked, the first two men who come by are a priest and a Levite. A priest was considered a good person because of the job he had. A Levite was considered a good person because of his family's name. Only people from the family line of Levi could become priests. The third person to arrive is from the country of Samaria. In those days, people from Israel considered people from Samaria religious outcasts that didn't follow God.

तःलटः मुन्देश्याः त्रात्रात्याः च्याः त्रात्याः च्याः व्याः व

- 1. महार राजियां विकासी के सिंग की कि मानि के सिंग की कि मानि कि सिंग की कि सि
- 2. थे:नुषः ह्यूदः तदे के तो विदः दे धिव वी
- 4. न्रिंन्गीलसून्यनेशेस्योभेन्गीर्

With that understanding, go back a read the story one more time and discuss the answers to the following questions:

- 1. What does this Scripture teach about people?
- 2. Why does Jesus tell this story?
- 3. After studying this story, how can you obey the commandment to love your neighbor as yourself?
- 4. Who can you share this Scripture with?



प्राचित्रः भ्री स्थान्त्रः स्थान्त्यः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्त्रः स्थान्त्यः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्य

Jesus makes it clear in this story that your "neighbor" is everyone you meet. We should show love to everyone we meet by treating them well. We should consider people from different villages, people groups, and countries our neighbors. In the same way, we should think of rich people and poor people, people with high status and low status, and people from different religions as our neighbors as well. We should show love to all of them.

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 1.4.

क्युः या मिनिषा रे व रे दे के व रा यो मावव तो सु र्या व सु मा मु या यह मा के तो से र दी। यो मावव ये नुस्यान है न न मे द्वापन मे या के वा विस्यान मुन्या पर न मे न के प्राप्त के विस्यान क चगुरा बेदेःश्वायावर्ष्ट्रा म्यायाम्बा न्याबेयवायाचीरः चेवः वास्ट्रायादः चित्रायः वियम दे ने विद्योग मर्था मर्थे मर्थे नियम देश में नियम देश में नियम देश में नियम है से मिल किया में नियम है से मिल किया में नियम है से मिल किया में मिल किया मिल किया में मिल मरेशर्रे ग्रेशनेग नेर रेपगवरे वे। देवे वद ये पर्श केंद्र देव पुराश प्राधिस यळेरातोः गर्देरः राज्ञे पश्चेरः देरः देशः चरा चुयरा पर्दे पः देशः प्रगतः वियरा ह्युपः शुं दरः रेग (र्रे:ब्रू:पोतु: 13 ष्राट: 8 व्रष:10 व्रट:पो:च्रीब:र्वेर:देग) ञ्जळ्दायम्नितामुकाम्यास<u>्त्रितामुक्तामुकास</u>्त्रियास्त्रेकास्यास्त्रम् स्वर्थान्यस्त्रम् स्वर्थान्यस्त्रम् स्वर् तर्गहेरार्चे ग्रीयाचेत्राम्बर्मास्य स्थान्य स् वै। बिर्गुणीयर्गवर्संन्बीर्देर् (धार्मेनि: प्रेय: १ अट: १ वट: प्रेरं नेश: देव: देव)

The Apostle James wrote, "If you really keep the royal law found in Scripture, "Love your neighbor as yourself," you are doing right (James 2:8).

^{1.4} The apostle Paul wrote, "Let no debt remain outstanding, except the continuing debt to love one another, for whoever loves others has fulfilled the law. The commandments, "You shall not commit adultery," "You shall not murder," "You shall not steal," "You shall not covet," and whatever other command there may be, are summed up in this one command: "Love your neighbor as yourself." Love does no harm to a neighbor. Therefore love is the fulfillment of the law. (Romans 13:8–10).

भुःळ्यः येदः वृत्राच्यः चरः येः ग्विष्ठः ग्वेषः प्रदः येः रेष्ठे ग्वेः प्रवेषः प्रदे प्रवेषः प्रवेषः प्रवेषः ये योः ग्वेषः भेग देः वेः र्केष्ठः ग्वेष्ठ्यः प्रवेषः प्

हीर पश्चिर देश कार्यर देश वाला का स्थान का स्थान के स्थ

- 1 ळेंग्रान्ठर तरी गुन्द त्रात्र गुगुरा गुरा हे दि में गुरा में।
- 2 बी'म्बिन त्ये'चुब्रबान्य धर'ने मुहेबार्स कुंबा चेर'रे र्देन हैं धेन म्
- 3 ब्रिंद्रग्रीमायमायोद्रान्धेरान्धेराद्रमार्मा
- 4 ब्रिंद्रगीर्बाल्केषार्बाचन्न्द्रत्वदेशाः विःश्वाः विः विद्राणीः विद्राणीः

Jesus also said, "So in everything, do to others what you would have them do to you, for this sums up the Law and the Prophets" (Matthew 7:12).

Read those three passages again, and discuss these questions:

- 1. What do we learn from these three passages?
- 2. What does it mean to love others?
- 3. What do you need to obey?
- 4. Who can you share these verses with?

तुःगुःगुर्रार्भ्यः द्वःद्वाःवानुत्रः नयोदः द्वां त्रः देनः द्वाः द्वः द्वः द्वः द्वः द्वः द्वः व्याः विद्वाः व नग्र-नग्रीन-नर्गेषाकुः देन। मिनेषासादे श्रेणायो प्रमानकेन नर्गेषाकुः दे धेन देव उ.ग्र.ग्रेशद्भावः अर्क्रवाः ये रहे वी प्रशादे प्रशाद स्वाप्त प्रशाद स्वाप्त विद्या विद्या विद्या विद्या वि ये नुदाने त्यमा येदामा र्ने दाकु दे ध्येदा देम दा गुरमा में कि मी मुका हे से गुर ये मुस्य परि स थेवरिया देखेर्ज्या कुराया हैं कें लिया थेवरिया थेवरवत्या अळ्या रेदि केंगा तर्या येव महिंदा कु दे दगाव यमा सं रिंद देवा द रेट हिंद गु गु शेष विद वी चगाव देट रिंवा वर्षायायेव महिंद वहुरायर विमानेव द में व अर्केम ये मर्शेय र क्रिंव प्रश्नेय दर्गाव अर्ळेग मेर्राष्ट्रित तो र्माव त्या यावट की देग दर्गाव अर्ळेग मेर्रा रामी द्या रादे ह्यारानेद्र देवी रद्यो हेरावयूद्य प्राया के र्यारा यो द्यारा के त्राया के के त् भ्राक्च स्थार्य वा मान्य वा मा र्दरा द्वावः ह्या वित्वदी वर्षेद्राया व्यावः देवा वानेषः हुदः वर्षाः ह्या वान्द्रा वर्षाः ह्या व्यावः देवा वानेषः हुदः वर्षाः ह्या व्यावः देवा वानेषः हुदः वर्षाः ह्या व्यावः देवा वर्षाः वर्षाः ह्या वर्षाः कॅग्ग्या वि'वह्यार्ये। रट'र्ळेंद'चेव'र्ये। र्देव'देवे'र्भ्रेर'ये'ये'यह्युव'यवे'प्रग्वाद्यय्यारे' याट खेट देया चेब दीबार्देर देया (या त्यर प्या त्येत 5 क्षट 22 देट 23 बट तो दीबार्दर दे) र्ग्म्यायक्र्याचीर्यापतुः वियावानुराग्चेत्रायाः वियावानुराग्चेत्रायाः वियावानुराग्चेत्रायाः वियावानुराग्चेतान् वियावान् वियावान यह्यम्बद्धः में स्ट्रिन

God has made it easy for us to know and understand the entire law of God. We have to do two things: love God and love people. How do we love God? By obeying His commands. How do we love people? By doing to others what you would have them do to you. It is simple to understand but sometimes challenging to do. Today, pray and ask God to help you keep His commands. God will help

you. God sent His Holy Spirit to every follower of Jesus to help them and give them power. Paul tells us that "the fruit of the Spirit is love, joy, peace, forbearance, kindness, goodness, faithfulness, gentleness, and self-control. Against such things, there is no law" (Galatians 5:22–23). The power of God's Holy Spirit helps us to love.

Followers of Jesus are a part of God's family along with all the other followers of Jesus. God wants us to help each other follow Him more closely. Therefore, it is important that we are a part of a group of people that help each other and keep each other accountable to God's Great Commandment.



देवमाणे भुक्षक्रिका विरामा सामिका देवा देवा देवा क्रिका विरामा के मिना देवा विराम ग्री:पक्कुद्र:व्रषात्मवरपर्श्विषाषाः भे:देषा दे:व्रषाः क्रॅषाः विष्यषाः याप्याः भाषिषा धे:वृः यो क्रवा विदःग्रीषाः द्यातः र्वे याश्चर्याः स्ति। विद्राणीयाद्रमें व्यक्ष्यां वे यान्ने याया महिष्याया विद्यानी विद्यानी स्वर्थाः देनदेवन्यत्रह्म्याध्येवन्देखाच्या दर्भविखळ्यायात्रस्यीत्युबाद्याध्येद्रम्बुखायीकार्वेद्रायो चुर्यसान्त्रीत्रगुरान्गीत् कुंदिता धरार्द्रामेश्वरत्ये महेस्र प्रमुद्र प्रमुद्र रद्यो यवतःभूरायाद्वरात्र्यत्यात्रायाः वाद्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विष्याद्वरात्रायाः विषयाः विषयः वि वटःवर्गम्यायः के विष्यं धेवः देगः चेवः मह्यद्रायः पेतः चेवः चित्रः चत्रः चत्रः चत्रः चत्रः चत्रः चत्रः चत्रः चत्रः वियमः यापमः परिमाणे भूमान्ते मानुष्य मानुष्य मानुष्य मिन्ना मिन्ना मानुष्य मानुष्य मानुष्य मानुष्य मानुष्य मानु गित्रेषात्रे प्रमायकेंद्राया भेदे दिवदावया माया के में या धेव देगा चेव ह्या या पित्र के या प्रमाया यह श्रेञ्च विषयः स्टार्सः दिन्दे साज्ञन्। केषा स्वाया विषयः दे गाः से विषयः से दिन्दे साज्ञ साव साव साव से से साव से क्षिवाबार्द्र दिवा दे र्रवायट द्र्याव अक्ष्वा वीबा चटा पारु द्राप्त के के त्रावा गा तो क्षेत्र विवादा व न्यावियायवराष्ट्री देःगुःशेययायेवयार्नेटर्वेषाकुःदेटा कॅराविययादेगावरावयार्गेवः यकूच मु: भूर जारी हैं राजे में का मित्र का मित्र का मित्र का मित्र के मिर्ग के मिर महिंद-द्वेष-प्रतिः क्रेंत्र-तो मह्यद्या देद-देव

After Jesus answered the religious law teacher's question by giving the two most important commandments, the teacher responded, "Well said, teacher. You are right in saying that God is one and there is no other but him. To love him with all your heart, with all your understanding and with all your strength, and to love your neighbor as yourself is more important than all burnt offerings and sacrifices." The religious law teacher agreed with Jesus' teaching and also said that keeping those two most important commandments is more important than all burnt offerings and sacrifices. People from many different religions have different practices and ceremonies.

यहेगाहेव तिविद्या विश्व स्वाधि का मुन्न स्वाधि का निव्य के स्वाधि का निव्य का निव्य के स्वाधि का निव्य के स्वधि का निव्य के स्वाधि का निव्य के स्

God also gave the Jewish people some religious practices that would help them remember the most important things about God and how people are supposed to live. But, like people all around the world, the Jewish people would do religious practices, but they didn't love God and love people.

The religious law teacher understood that obedience is more important than religious practices, offerings, and sacrifices. One of the Jewish Prophets, Samuel, once said, "Behold, to obey is better than sacrifice" (1 Samuel 15:22). Through another Jewish prophet, Hosea, God said, "I desire steadfast love and not sacrifice, the knowledge of God rather than burnt offerings." (Hosea 6:6) Even today, many people like to do religious things like burning incense and giving offerings, but what God really wants is obedience. God wants us to obey the two most important commandments to love God and love people.

च्या स्वर्य स्वर्या स्वर्या विश्वर्या विश्वर्य विश्वयय विश्वर्यय विश्वयय विश्वर्यय विश्वर्यय विश्वर्यय वि

When Jesus saw that the religious law teacher had answered wisely, he said to him, "You are not far from the kingdom of God." Jesus understood that the religious law teacher was close to being in the kingdom of God and submitting his entire life to God's authority. What else did the religious law teacher have to do to be in the kingdom of God? The same thing we all must do after we understand God's teaching: we must obey.

नभुताती नगात कु

The Great Commission

2.1 चनायः म्हेन्द्रेष (अह्रिन्यः वोत् १ क्षातः ३)

2.1 चनायः महेन्द्रेष (अह्रिन्यः वोत् १ क्षातः ३)

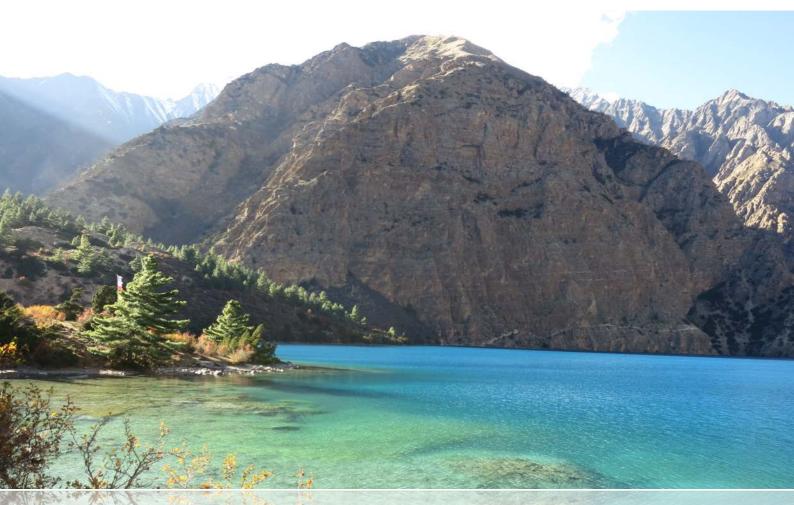
2.1 चनायः महेन्द्रेष (अह्रिन्यः वोत् १ क्षातः ३)

2.1 चनायः महेन्द्रेष (अह्रिन्यः वोत् १ क्षातः अत् १ व्यातः विद्यातः विद्यातः

2.1 Jesus taught the Great Commandment to a large crowd of people. Some people in that crowd were followers of Jesus and some were not. A few days after He taught those two most important commandments to the crowd in Jerusalem, Jesus willingly gave up his life as a sacrifice for all people, and was killed on the cross. Three days later he rose again. His spirit not only came back to life, but also his body. Luke tells us in Acts that, "He presented himself alive to them after his suffering by many proofs, appearing to them during forty days and speaking about the kingdom of God." (Acts 1:3)

र्या ने क्वा के प्रति स्वा के व्या के

At the time Jesus came back to life there were 11 remaining disciples from Jesus' 12 closest disciples. This is because Judas, the disciple that betrayed Jesus, had killed himself because he regretted betraying Jesus. (Matthew 27:3-10) The first time Jesus appeared to his disciples after he rose from the dead, one of the disciples wasn't there.



द्वारेषुःश्चराण्याः विष्याच्याः विष्याचीयात्राचीयात्राची विष्याची विषया विष रगुराये अर्देव सुराये प्रमाणवर मा अर्के अचेर रे में सूर्य रे रे स्वार्य राज विवास गार्थ में सुवास रे से सुवास रे सुवास रे से सुवास रे सुवास रे सुवास रे सुवास रे सुवास रे से सुवास रे से सुवास रे सुवा बेद-देग देन्बरार्श्चित्रायाम्बद्धाराण्येषानेद-तो हिन्दे ते प्रिम्बह्या हुट म्बद्धारी देग धेद द्वरा र्घे भू विष्णाम्या सेन् विष्णाये मानेर पक्षपा हेषा से दिए। विष्णा सेन्या हिमाया से स्वार्थ से स्वार चर्चम्बाह्यादेवे वटाये प्रदेशस्याम्याचर्चम्बायम् । प्रवास्याच्यायम् । प्रवास्याच्यायम् । प्रवास्यायम् । प्रवास चेव ञ्चरायी देव देवराववाय पक्त पुर देर हेरायो ज्ञित या थे रे ज्ञेव यो ट्वें व या ट्वें द रायी विदाय देवे बदाये क्वें पह्रवर्धे प्रमुप है पर्यू दे अवत्। व्यू विद्यू विदाय विद्यू विदाय विद्यू विदाय विद्यू विदाय विद्यू विदाय विदाय विद्यू विदाय विद देग देवसाथे:भ्रावदायादेवेवदायेवसार्वदसाने। क्रियासाग्राग्री:दग्रीयायेविदसाने। हिदाग्रा येवि'निरे केंद्र न्दर क्रिंग चेव गहाद राधी देग दे वर्ष थे श्रूर्य क्रिंग दे हिंद ग्री सहिंग ग्री राधि देश गानमुप्राते नर्स्याया विष्याया विष्याया विष्याया विषया व्यार्थे यू विया वितास्त दे दि दे दे दे दे दे दे दे वा वितास के वा के नुषार्वियो विन्गीषात्यवित्से न्द्रायानुषायी देव त्यायवित्तवत्त्र त्यात्रवित्र यापव दे पदे पळे दे नेव पशुप्रापी देग (थे ज्व व पोतु 20 अप 24 वर्ष 29)

John wrote about it in his gospel saying, "Now Thomas, one of the twelve, called the Twin, was not with them when Jesus came. So the other disciples told him, "We have seen the Lord." But he said to them, "Unless I see in his hands the mark of the nails, and place my finger into the mark of the nails, and place my hand into his side, I will never believe." Eight days later, his disciples were inside again, and Thomas was with them. Although the doors were locked, Jesus came and stood among them and said, "Peace be with you." Then he said to Thomas, "Put your finger here, and see my hands; and put out your hand, and place it on my side. Do not disbelieve, but believe." Thomas answered him, "My Lord and my God!" Jesus said to him, "Have you believed because you have seen me? Blessed are those who have not seen and yet have believed." (John 20:24–29)

ॻऻॖॱऄॣ॔ॸॱज़ॖ॔ढ़ॖॾॴॺॱॸॾॸॱॸॗ॓ॱॻॖॱॴॸॱॸॣॎॕॴॱॴॺॱॻॖॺॱॸॖऻ*॓॓*ॱढ़ॺॺॱढ़ॕॴॱज़ॱॻॖऀॺॱॸऻढ़ॱ ॻॱॻॖऀॱॾॣॕॸॱऄॱॼॕॖॺॱॾॣॸॱॼॖऀॺॱॸऀॴ

- 1. वित्रगुःगुरूषियार्वे यावियार्वे यावियाचियात्वे यावियाचियाय्ये यावियाय्ये यावियाय्ये

Read that passage above one more time. Then, discuss the following questions:

- 1. Why do you think Thomas doubted?
- 2. Do you think Jesus was angry at Thomas for doubting?
- 3. What do we learn about believing without seeing?



यो नुस्तर्राच्या के स्वास्त्र स्थित निक्ष स्था स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्था स्व स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्था स्वास्त्र स्वास्त्

पश्चित्रात्ते प्राप्त क्षित् क्षेत्र हो स्रोत्ते स्था क्षेत्र क्षेत्र हो स्था क्षेत्र हो स्था क्षेत्र हो स्था हो हो स्था हो स

- 1. ळ्याबाचठर रे यावेबावर ते यावेबावर ते त्या ग्रीबाधे स्वीत क्षेत्र त्या ग्रीक्षेत्र ते के क्षेत्र स्वीत क्षेत्र ते ते के क्षेत्र स्वीत क्षेत्
- 2. र्रेंप्यरिग्रागुर्वारुदिर्भेरियाचिर्स्याच्यापीरिवासेयसगीर्वा
- 3. र्रिन्यन्त्रुःग्रेम्दिग्दिग्रः र्र्भुव्येद्रः येदः विगः धेवः देगः रोयरागुः ग्राय

Jesus appeared to His disciples many times. Jesus ate with them, let His disciples touch him, and taught them many things (Luke 24:36-49). Before Jesus ascended into heaven, he gave his remaining eleven disciples a commission sending them out to proclaim God's kingdom to the whole world. This is what we call the Great Commission.

The beginning of the Great Commission is found in Matthew 28:16-17. It says, "Then, the eleven disciples went to Galilee, to the mountain where Jesus had told them to go.When they saw him, they worshiped him; but some doubted."

Read those two verses again and try to imagine the scene in your head or draw it on a piece of paper. Discuss the following questions:

- 1. What do we learn about the disciples in these two verses?
- 2. What kind of doubts do you think some of the disciples had?
- 3. Do you think the eleven disciples were perfect?

We don't know how many of the disciples were doubting. We also don't know what they were doubting, but we can see clearly that some of the disciples had doubts. At the same time, they worshipped Jesus and obeyed his command to come and meet him. Therefore, the disciples were not perfect and did not have perfect faith, but they were being obedient. In the next section we will see that Jesus gave the most important job to this imperfect group of disciples.

यह्म मार्ग्य वित्र में मार्थ नित्र में मार्थ में मार्

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 2.2.



2.2 र्यटःळ:धे:रे।

नञ्जूषायी नगात कु

देवसङ्ग्रित्यात् सुरावित् यहेत् वित्राया विद्या वि

2.2 All Authority

The Great Commission

Then, the eleven disciples went to Galilee, to the mountain where Jesus had told them to go. When they saw him, they worshiped him; but some doubted. Then Jesus came to them and said, "All authority in heaven and on earth has been given to me. Therefore go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you. And surely I am with you always, to the very end of the age."

(Matthew 28:16-20)

मृत्यं त्रात्त्र त्रित्ते व्याः भ्रात्यं व्याः व्यः व्याः व

- 1. र्श्वित्र अप्तर्भागी असे से स्वाप्त प्रमाण के प्रमाण
- 2. ग्रवसमानिकामी:र्नर्क्षः धेरे थेर्श्लो ग्रवह स्वर्धा ने स्वर्धा ने स्वर्धा म्यूनिका म्यूनिक
- 3. विदासे द्वदाक सेन्सेन स्वापन स्वाप
- 4. त्यरः कः भेः तेः भुः भाषा व्याः त्रितः त्रिषा विष्टः विष्यः विष्टः विष्यः व्याः विष्टः विष्यः विष्टः वि
- 5. ब्रिंद्रगीषाश्चार्याम्बद्धाः स्वायदे विद्रगीर्द्

Please read through the Great Commission one more time and discuss the following questions:

- 1. Jesus knew that some of the disciples had doubts, but He gave them the most important job. Why do you think He did this?
- 2. What does it mean that "All authority in heaven and on earth has been given to Jesus?
- 3. Is there anything that is outside His authority?
- 4. Because Jesus has been given all authority, He tells His disciples to "Therefore, go and make disciples." What does it mean to go in Jesus' authority?
- 5. Who can you share this Scripture with?

Jesus has many different titles in the Gospels. Sometimes he is called the Messiah, Lord, the Son of God, and also the Son of Man. To understand the title of the Son of Man we have to read the words God spoke through the prophet Daniel:

In my vision at night I looked, and there before me was one like a son of man, coming with the clouds of heaven. He approached the Ancient of Days and was led into his presence. He was given authority, glory and sovereign power; all nations and peoples of every language worshiped him. His dominion is an everlasting dominion that will not pass away, and his kingdom is one that will never be destroyed.

(Daniel 7:13-14).

थे.विश्वःस्टावे.शुप्ते.वा.लावे.च्चेव.शुप्तःचेवात्त्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्र्यःचचटःवटःषाःलवःयायाटःस्यात्रुट्यः मवदःर्देदःदेम अदःर्विदःमेषादःवेःश्रेतेःचेःषाधेवःचेवःहेषाःविमादेःवयाम्बुद्धाःदेगःचेतः वी विट.ज.पह्नेय.चर्चेय.चेब.धी ल.थं.चे.तपु.अकूर.त.पचीजावय.मे.पूर्टेट्। कूबाविश्वात्त.मे. ग्री:सर्वःभे:विदिःवर्गे:कुःगशुप्राचीर्यःदीन् सर्केरःपःवतुषःसम्बरःगुःदेपः। केंशःविस्राधःपरिःगुः ग्रीमाधी:भृगम्बर्गन् कु.पो:ह्यान्द्रनाचीन्द्रन्निम नेव्यासक्रम्यावत्यास्य मर्सेन्द्राव्याधीन् यो ब्रिंदःग्रीमःत्मान्दःत्रःचात्र्यामायायवःदर्गावः अर्केयाः ये अवतः चञ्चतः ने ब्रिंदः रदः दर्गावः यक्रमामी स्वास्त्रम्भान्यास्त्रम् व देः धेव द्वा वेद गुः तो देद स्वादे देव देव स्वादे देव देव स्वादे देव देव स रटानेशनश्रुट्याचे र्रेनावर्धेया वर्षेया वर्षेया प्रतित्रा हित्रा हित्रा हित्रा हित्रा हित्रा हित्रा हित्रा हित्र सर्वेट ग्री देवा चेत्र वाश्वर राये देव (स्रेट म्रू त्येतुः 26 ष्राटः 63 त्रारः 64) प्यः हु दू रायेः अर्केर्प्यावनुवायावनगुग्रीकार्रेष्ठार्वाचीरात्वे वे वे श्रूकार्विट्रस्ट वे सुट्रार्हेन्यप्रपुष्ठ वे क्षेत्रावताम् चेन्राचुराये देरार्दे वात्रा अते ये राष्ट्रिय महित्रा वार्ष्ट्र वार्ये क्षेत्रा वार्ष्ट्र वार्ये अर्केर्प्यत्त्व्यायावद्याः विष्ट्रियाः यहः मृत्यायायाः देव रिःयोः चेरः दे। विष्टागुःगीयायेयायोः थे:वृषाविदः रदः द्र्गाव अर्केवा धेव दे द्रयदः दें पुषादी देवा धेव वतदा अर्केदः या तत्त्वा याववःगुःगुराधेराधेर्वाधेराकेराक्षायाः प्रसायेत्रा धेर्माकेरिक्ष्यायः मुर्गाकेराक्ष्याः स्वर्षात्राम् ये:देग

Jesus spoke of himself as the Son of Man many times in Matthew's Gospel. The last time was after Jesus was arrested and when he was standing before the Jewish high priest and the teachers of the law. They were looking for some excuse to kill Jesus. The high priest said to Jesus, "I charge you under oath by the living God: Tell us if you are the Messiah, the Son of God." "You have said so," Jesus replied. "But I say to all of you: From now on you will see the Son of Man sitting at the right hand of the Mighty One and coming on the clouds of heaven." (Matthew 26:63–64). The Jewish priests understood that Jesus was saying He was the Son of Man from the prophet Daniel's

vision. These words made the Jewish priests very angry because they understood that Jesus was claiming to be God, and they did not believe him. They were so angry that they killed him.

Now, some days later in the Great Commission, Jesus once again speaks words similar to Daniel chapter 7. He has now proven that He is the Son of Man by raising from the dead and standing before His disciples. He tells them that the prophecy spoken through Daniel more than 500 years earlier has been partly fulfilled saying, "All authority in heaven and on earth has been given to me." Jesus is the Son of Man that has been given all authority, glory, and power. All nations and peoples of every language will worship him, and His kingdom will never be destroyed.

त्रभुयायीयगायकुरदिवद्यायो ध्येषुष्यस्य मित्र्याकुर्यायो मित्र्याकुर्यायो मित्र्यायक्ष्य मित्र्यायक्ष्य मित्र्य मित्र्य मित्र्य मित्र स्वायक्ष्य स्वायक्षय स्वायक्य स्वायक्ष्य स्वायक्ष्य स्वायक्ष्य स्वायक्य स्वायक्ष्य स्वायक्षय स

है। इस्यायिः श्चितः श्

In the Great Commission, Jesus is sending out His disciples. He is sending them based on His authority. He is the Son of Man; the King that stands far above all other political or earthly leaders. There is no authority that doesn't belong to him.

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 2.3.



2.3 वें दे तो यहेव है। द कुम्बा

देवसर्श्चित्यात्वरुगिर्वगण्णायो धेनुस्यम् स्ट्रियात्वर्धात्वर्यत्वर्धात्वर्धात्वर्धात्वर्यत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्यत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्वत्वर्यत्वर्यत्वर्वत्वर्यत्वर्वत्वर्वत्वर्

ण.च्य.चेंय.चेंय.चेंय.चेंये त्य.चं.चच्चेंय.चेंये.च्यांत.चें.वर्तुंत.भूं.च.ज्यंचात्ययःचेंय.चे। क्यांज.क्रं.च्यंत.चें.च.दे.चें.चें.भूं.च.

- 1. ळ्याबानर् वित्वत्वात्यातुःगुःगुकाधः वृतिःवळ्राम्बिःक्र्रिरायो स्विः वित्वत्वात्यातुः मृत्वा
- 2. र्र्स्नियाम्ब्रीयाकुरिया विष्णायोधानुतिः र्ब्स्नियाकुळे दः तुः स्नियाम्बर्धियाकुर्वे विष्णायोधानुतिः स्वर्

- 5. नगविषे ते र्सेन्यागु ग्रीषासुट क्वुं केट्र ट्र स्वित्र स्वित् ग्रीषा चेत्र ते र्देव दे रिषेव में।
- 6. न्रमुताः वी नगातः कु ति ने सुति के न न धीव में।
- 7. न्तुब्ध्यायदेवेव्दायो ब्रिंद्रग्रीकान्सुयायीनगायः कुत्दे छे यो चुका हे त्ययायेव्या हिंद्र क्रियेव्यक्ती

2.3 Therefore, go!

Then, the eleven disciples went to Galilee, to the mountain where Jesus had told them to go. When they saw him, they worshiped him; but some doubted. Then Jesus came to them and said, "All authority in heaven and on earth has been given to me. **Therefore go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you.** And surely I am with you always, to the very end of the age." (Matthew 28:16-20)

Read through the Great Commission one more time and then discuss the following questions:

- 1. What do we learn about Jesus' plan in these verses?
- 2. What is the difference between going to make disciples and inviting someone to come and hear about Jesus?
- 3. Do you think there is a difference between making a believer and making a disciple?
- 4. Who do you think has the authority to baptize?
- 5. What does it mean to "teach them to obey?"
- 6. Who is this commandment for?
- 7. How can you obey the Great Commission this week?



द्यान्त्रः भूतः स्वाविवाधितः देन भूतः स्वाविद्यान्त्रः स्वाविव्यान्त्रः स्वाविव्यान्तः स्वाविव्यान्तः स्वाविव्यान्त्रः स्वाविव्यान्तः स्वाविव्यान्य

श्रम् त्राचनाः स्टान्न्याः स्टान्याः स्टान्यः स्टान्याः स्टान्याः स्टान्याः स्टान्यः स्टान्याः स्टान्यः स्टान्याः स्टान्यः स्टान्य

Jesus now commands His imperfect and sometimes doubting disciples to go and make disciples of all people groups. What is a disciple? A disciple is a student or follower of a teacher or leader. Jesus is the leader and teacher, and disciples of Jesus are His students and followers. A disciple of Jesus learns from Jesus and obeys His commands.

How did Jesus make disciples? When Jesus called His disciples, He said, "Follow me." Jesus invited His disciples to come with him, live with him, see what he did, hear what he said, and do the same. Jesus taught with His words, but He also modeled with His actions. Jesus showed His disciples how to live by being a perfect example.

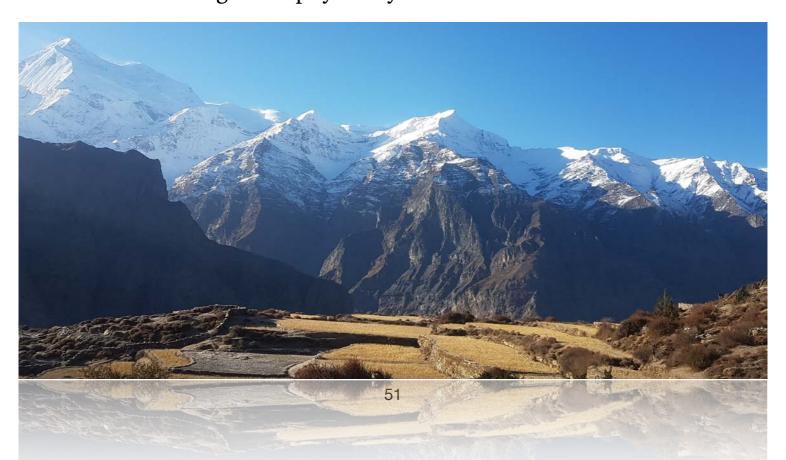
लट.टे.थ.चरी लु.चेंब.४८.वु.धूंच.वा.वी.पूर्व रमूच.वा.वी.क्यांवच.वी.धूं४.जु.वी.व्यांवा चर्चेदःकुः भेः विदः वीषार्रे वाषाः भया गुषाः भेग द्रः गुः गुषाः चदः वात्रयः च चदः भेरेदेः वदः भेरे ह्ये च यागुःगुमान्याः भाषाः प्राचीतः देवायाः निष्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्य ग्रीकाहेकात्रप्रतामाकारायागाः वेतिष्कामार्कावान्यायाने विष्ठा (विष्ठाववाने विष्ठा ४ छ्या २) मर्वेदा वर्रे: व्या (ब्रेट् वृः पोतुः 17 ष्राटः 14 व्याः 20) पो: न्यां व्याः वर्षेट पो: क्रें राष्ट्रे होरः क्रुटः র্নার্শ্রনামান্ত্রাদ্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র দ্র্যাদ্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র দ্ব্রাদ্র্যাদ্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র্র দ্বর্যাদ্র্র্যাদ্র্র্যাদ্র দ্ব্রাদ্র্যাদ্র দ্বর্যাদ্র্র্যাদ্র দ্বর্যাদ্র দ্বর্যাদ্ 36) थे:नुषाणायळवायह्रपाव्याचेवा श्चित्रागुगीषाच्यात्रायाचार्यात्र्याचेषाच्या व्यायेतुः २१ ष्यदः १ वृषः १४) प्यदः तृषाम्बव्यायां विमायोः चदः प्योः शृषान्य दिने श्रीयायागुः द्वीः योः नह्मम्याची निष्या विष्याचित्र प्रति । प्रति विष्याचित्र विषयि । प्रति वि र्षाम्वरास्त्रिम्भेः स्वार्स्यायम् वर्षान्य महिष्ये भेरा स्वार्धि स्वार्य स्वार्धि स्वार्धि स्वार्धि स्वार्धि स देव देव क्रें र ते तु गु तेव र तु ते व र ते क्ष ह्य गी देव क्रें प या दे गु गी या द गें व यकें व वी कि ता पिनः गुः क्रें र तो ग्राया निवा निवा निवा क्षेत्र हैं। तो निवा के स्वा के स्व के स्वा के स्व के स् देशचर्। र्रेन्य अदेगुः भ्रेत्य द्वार्य भ्रेत्य द्वार्य स्वार्य विषय द्वार्य क्षेत्र स्वार्य विषय द्वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्व रे'भे'शु'भे'चश्र' दे'देग

Jesus would also allow His disciples to do the ministry of the Kingdom of God while He assisted them. We see the disciples actively engaged in Jesus' ministry throughout the Gospels. For example, they baptized new disciples (John 4:2), cast out demons (Matt. 17:14-20), and were a part of Jesus' many other miracles like feeding the five thousand (Matthew 14:13-21). Peter also walked on the water with Jesus (Matthew 14:22-36), and the disciples brought in the miraculous catch of fish (John 21:1-14).

द्रम लुक्ष्वत्या क्रियाक्ष्याचान्त्र क्षेत्र त्या कष्त्य क्षेत्र त्या क्षेत्र त्या

There were other times when Jesus sent out His disciples: He sent out the 12 disciples in Matthew 10 and the 72 disciples in Luke 10. The disciples proclaimed the coming of the Kingdom of God without Jesus' assistance and then reported back to Jesus on their experiences.

Finally, in the Great Commission, we see Jesus sending out His disciples to carry on God's work without Jesus being with them physically. The disciples would always have access to Jesus through prayer, and they would have His Spirit with them, but Jesus was leaving them physically.



र क्रिंच या चक्री बाक्कु क्रीं र त्ये ये वा दिने विवा सार्वे वा विर्वे वे वे श्वीवेद र र दिने ये वा दिने व्या राविगाधेव देग दारागु गुराधे श्रवे हेरा वच्च पादे हें में धेव सेव दे रूप से ये:श्रेमान्द्रोत्वान्द्रें त्वाङ्कें त्र न्वें बार्के न्वें वार्के वारके वार्के वारके वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वारके वारके वार्के वारके वार्के वार्के वारके वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार्के वार् र्यः धरः द्वाः यः देवेः हेरायोः व्यू रः कुः क्रें रः यो क्रें वः प्री प्रः देवः देवः हेरायो वः गुःगुत्रार्श्चित्रःयाम्बरःयागुःभेःचदःभेःर्रम्बरःभयागुत्रात्ते। दर्गाद्यःबर्ळम्मे।प्रमादःभेःवदःदः वह्माकुरिटा विट्योध्यालबानग्रीटर्ज्यह्माद्वीबार्द्र्या विष्या विषयोष्ट्रीया विष्या नगायः यो शे तुव रें द ने विषाद में व सकें वा वी सुवा याषा शे न वी द रें द देव या या रें से न वस्याः व तः गुःगुर्वाद्दः गुःगुः कुनः यो नस्द दे । यः नर्त्त्र्याः व ह्याः नर्वे व दे दे व व दे व व व व व व व यवतः सः दे तो क्लॅच सामायर पा गुणिया तु गुणीया चारू व प्यति सीमा द्वी पी हो च सामाय व व सामाय सामाय सामाय सामाय चटायो दुवैः र्रेग्रायायायोदः देः चक्कृदः व्रषः र्रेञ्चः देटः र्रेग्र्यायाययायोदः ग्रीः देग् देः व्रषः दुः गुःगुत्रार्श्वेत्यादेःगुःभेर्रम्यायायग्रीद्रम् द्वादेःस्रस्यायस्य विष्ट्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् यम्यात्रम्यात्वतः संविषाः में देवः यो यम्यान्य में द्वार्यः स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व नर्भूषाकुःभ्रूरायाधीयाद्यायदेशनभूवार्यद्या दातुःगुःगुषाचटार्वटायोषानसूवायविधीयाद्याः दे लग लेब निरम्भे क्षेत्र वा निर्मेश ह्या गी देग

Jesus is the perfect model for us in disciple-making. Our lives should also model what it looks like to be a follower of Jesus. We should teach people to follow Jesus' perfect example. Next, we should assist new disciples as they obey God and do the ministry. A disciple is not fully obedient to Jesus unless they do God's ministry. As the disciple grows, we need to step away further and only watch and advise. Finally, the time will come when we leave the new disciple to follow Jesus without our assisting or watching. This example is how Jesus made disciples and how we can make disciples today.

चिन्येत् नित्त्वानुषाण्ची अधिवान्यानुः श्वीत्रवार्यः श्वीत्वान्यः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्वान्यः वित्तः व

Jesus commands His disciples to make disciples of all people groups. This is God's plan! People from every "nation, tribe, people and language" (Revelation 7:9) will become Jesus' disciples. Jesus said, "and this gospel of the kingdom will be preached in the whole world as a testimony to all nations, and then the end will come. (Matthew 24:14).

In the process of making disciples, Jesus commands them to do two things: baptize them in the name of the Father, the Son, and the Holy Spirit, and teach them to obey everything Jesus commanded them.

विज्ञामर्श्या दे दी जिंदा में प्रकारी प्रकेर विज्ञा होता में हिंदा में प्रकेर में लियं नेया लट. स्वा. प्रांता क्रीया चटा स्वा. प्रांता क्रीया व्या. सेया व्या. प्रांता क्रीया व्या. प्रांता क्रीया व्या. प्रांता व्या. प्रांता क्रीया व्या. प्रांता क्रीय क्रीय व्या. प्रांता क्री. प्रां देवे:ळेद:त्। तु:गु:गुःश्वार्षायार्षायः नूद्राद्याः पवे:पक्कुत्वार्तुः गुःवे:विदःवी:क्रेवःये:तूरःविदःवो: नरुग'री'रेट'र्रुग'तर्'धेव'रे'य'चर्। थट'थन'ग्रे'ग्ची'न्हेर'रुव'ग्रे'त्र्यास्रु'रेष'ञ्जूनष' अर्मेव थे शृष्पट दट मर्नेव रे ज्ञटक मवट ये रेम वर्ष वर्ष वर्ष मवर प्रे वर्ष नः भ्रेलः द्युनः कुः केदः दुः धेवः देवा चेवः द्येवा वेदः देवा (र्रे : व्यूः धेवः 6 ष्यदः 3 देदः 4) खुषः मर्सेलादे दी हिर्गु गुर्मार दाले दिर्ग्य मिन्ना मिन यःगुःश्चर्वाः स्ट्राः वार्ववागाः वावारः यः देः वीवार्ष्ठवाः वर्षः वीवार्षेतः देवा देः वीत्रवाः ह्वाः हः वाष्ट्रवाः याववःरेटःचर्गेदःववटःयाववःग्रेःवाच्चवाषःचक्र्वःर्रुवाःवदःवाष्यरःधःचर्चःववटःग्रेःदरः देव (मृ.जू.सं.जू.स.जू. ३ क्षट. ७ देट.१०) विकामक्राण.दे.वी लट.दम.संदु.शु.मी.कुट.दे.श. देवा दे वे त्वक्षे त्वते त्यवायो त्विद् व्यापव वाविषामा हित्य दे गु देता हें द्रायव त्याप्य ते गु श्रम्याने अध्याये प्रतिः से स्वाप्यायाया विष्यायाया विषया वि ये धेव देग

Baptism is a physical representation of a spiritual decision. Paul writes to the Romans, "don't you know that all of us who were baptized into Christ Jesus were baptized into his death? We were therefore buried with him through baptism into death in order that, just as Christ was raised from the dead through the glory of the Father, we too may live a new life." (Romans 6:3–4). Baptism is a commitment to "taking off our old selves and its practices and putting on the new self which is being renewed in knowledge in the image of its Creator" (Colossians 3:9-10). That means baptism isn't for those who have become perfect. Instead, baptism is for those who desire to get rid of the old ways that lead to death and follow Jesus' way that leads to life.

The second part of the command Jesus gave them was to "teach them to obey everything I have commanded you." The disciples were commanded to teach new disciples to obey all the commands and teachings Jesus gave His disciples while He was with them. These new disciples don't only need to gain knowledge or understanding, they need to obey Jesus' commands. True disciples of Jesus obey His commands.

Those first disciples of Jesus made other disciples of Jesus and taught them all of Jesus' commands. That pattern has continued through the years. Today, you are hearing Jesus' final command before He returned to His Father. The Great Commission is a command for you also. All followers of Jesus must obey the Great Commission.

थे. शुक्ष क्च्रंच क्ष्रंच अदः रंग्व क्ष्रंच मान्य दिन देन क्ष्रंच क्ष

Jesus concluded one of his teachings by saying, "Therefore everyone who hears these words of mine and puts them into practice is like a wise man who built his house on the rock. The rain came down, the streams rose, and the winds blew and beat against that house; yet it did not fall, because it had its foundation on the rock. But everyone who hears these words of mine and does not put them into practice is like a foolish man who built his house on sand. The rain came down, the streams rose, and the winds blew and beat against that house, and it fell with a great crash." (Mt 7:24–27).

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and begin the next lesson starting at 2.4.

2.4 ८ हिन्गु गुः भ्रेन् वे वे दिन ने व

यञ्जितात्वात्र क्षेत्र स्वर्धित् स्वर्ति व्याप्त स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर् द्रमा क्षेत्र स्वर्ति स्वर्ति

2.4 I Will Be With You

The Great Commission concludes with, "And surely I am with you always, to the very end of the age." Jesus has given His 11 disciples a very big job: make followers of Jesus from every people group all around the world! But, He reminds them that He will be with them always.

Jesus was leaving them physically but He was sending them His Holy Spirit. The Father, the Son, and the Holy Spirit are all one in perfect unity. Jesus was returning to His Father and sending the Holy Spirit to live with His disciples.

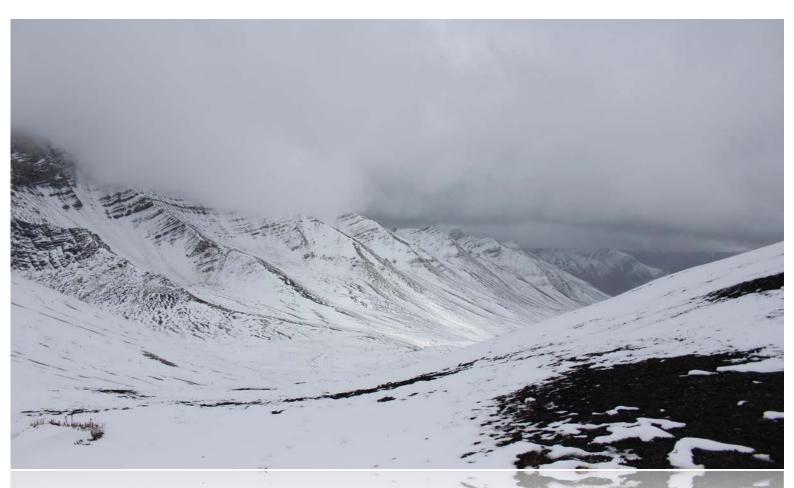
देवे अळ्ब र्से प्यान्ति वास्त्र प्राची प्राची प्राची स्वाची स्वाच चुर्रापते क्रेंब यो विद्राण ग्रेंब देव सदारे विवा वो क्रेंच ये के विद्रा प्राप्त के विद्रा स्वा के विद्रा स्व के विद्रा स्वा के विद्रा स्व के वि ग्राह्मरूष्याची अत्राह्मर्थे व्याप्त विद्याम्य विद्याम विद्याम्य विद्याम व महारमार्देर देग यर थे नुषा चर अर्ळ द र्रे दे यो शे दिया मेषा र यो गुरुष परे राग्र र र द वा दते नगात शुद्रा सावव दे भी द देद खा गु गाविका गा विते संभो विद्र से केंद्र भी भी द भी नुसका चक्के'चग्र्रार्थे'चग्रेद्राय्वद्रग्रेषाद्वे'चग्राद्धे'स्ट्राद्वि'चग्राद्धे'स्ट्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे'चग्राद्वे दते'चक्कुद'व्यायादेग द'€्रायायव'दते'ख'ग्रोते'चगाव'धेव'देग द'ष्ठिद'ग्रा'ग्री'श्चेव'वो'र्स्ट्र्य भूरळवर्रित्राधेरे हिर्गु तो ह्यू राक्षर रे धेवा धेव वत्रा रे म्या राय हिर यापव र्या रावे ह्याबानिर देनी आग्रेबादिर सेस्पान कुर दबार दिया ग्री देवा विदानी बाहिर ग्रा तो दिवा थे रेस् रे'याचरा द्वि'वि'चरे'छिर'गु'भे'च्चेब'र्वेरा द्रषाचुब'यवे'वि'चरे'रे'वे। व्हेगाहेब'ये'गु'गुषाचुब' पतिःविःचरेःदेदःशेःवर्ःदेरःदेग छिरःगुःशेअशः भ्रें श्रूदःदेदःवष्ठरःश्रूदः अःचग्रेदःश्रेगः चेवःगश्रुदशः र्देर-देग (थॅ.२.वव.जंदी: 14 लट. 23 वर्ष 27)

On the night that Jesus was betrayed, He was with His disciples sharing a meal together. That night He taught them many things they needed to know before He was arrested, killed, and three days later raised to life again. While he was teaching them, he said, "Anyone who loves me will obey my teaching. My Father will love them, and we will come to them and make our home with them. Anyone who does not love me will not obey my teaching. These words you hear are not my own; they belong to the Father who sent me. "All this I have spoken while still with you. But the Advocate, the Holy Spirit, whom the Father will send in my name, will teach you all things and will remind you of everything I have said to you. Peace I leave with you; my peace I give you. I do not give to you as the world gives. Do not let your hearts be troubled and do not be afraid. (John 14:23–27).

- 2. ਘੇ.੧ੑ੶ਸ਼ੇ੶ॻॖੑਸ਼ਲ਼੶ਜ਼ੑਫ਼੶ਜ਼ੑੑੑੑੑੑਸ਼ੑੑੑੑਸ਼੶ਜ਼ੑਗ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑੑਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑੑਜ਼ੑ
- 3. धे:श्राप्यायि:द्युम् राष्ट्रित्या वित्राण्ये वित्राण
- 4. ५'तु'गु'गुेष'ग्राह्यू रूप'र्द्य'त्रि'ही'सु'त्रे'हें द्

Read the verses above again, and discuss the following questions:

- 1. What do we learn about Father God, Jesus, and the Holy Spirit?
- 2. How do we learn about loving Jesus?
- 3. What does Jesus say the Holy Spirit will do?
- 4. Who can you share this Scripture with?



In the book of Acts, we read about Jesus' promise to send the Holy Spirit. In Acts 1:4-9 it says, "On one occasion, while he was eating with them, he gave them this command: "Do not leave Jerusalem, but wait for the gift my Father promised, which you have heard me speak about. For John was baptized with water, but in a few days you will be baptized with the Holy Spirit." Then they gathered around him and asked him, "Lord, are you at this time going to restore the kingdom to Israel?" He said to them: "It is not for you to know the times or dates the Father has set by his own authority. But you will receive power when the Holy Spirit comes on you; and you will be my witnesses in Jerusalem, and in all Judea and Samaria, and to the ends of the earth." After he said

स्त्रित्याणुः त्याप्तेः ह्या वित्राचित्या होत्या वित्राचित्या होत्या वित्राचित्या होत्या हात्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत्या होत

this, he was taken up before their very eyes, and a cloud hid him from their sight.

Jesus knew that without the Holy Spirit, his disciples would be powerless to obey the Great Commission. But, with the Holy Spirit, they were able to spread the news about God's Kingdom to many places. In the same way, we are also powerless to obey the Great Commission without the Holy Spirit. But, God's Holy Spirit makes it possible for ordinary followers of Jesus to do extraordinary things!

- रवास्तरे मुग्ना नेदानी उग्राणी र्मग्वास्त्राधेन देग (ध्राप्तन्त्रन सेतः १४ छनः १४)
- र्याम्पत्रिम् मा क्रिन्त्री ब्रिन्गुः क्षेत्राये विषया मात्र मा क्रिन्त्र विषया व
- न्यायते हुग्राय तेन् ग्रीयातु ग्रायो देन यो ने क्षेत्र मेन्न प्रायते हुग्राय ने न्यायते या वित्र ग्रायते हुग्रायते हुग्रायत

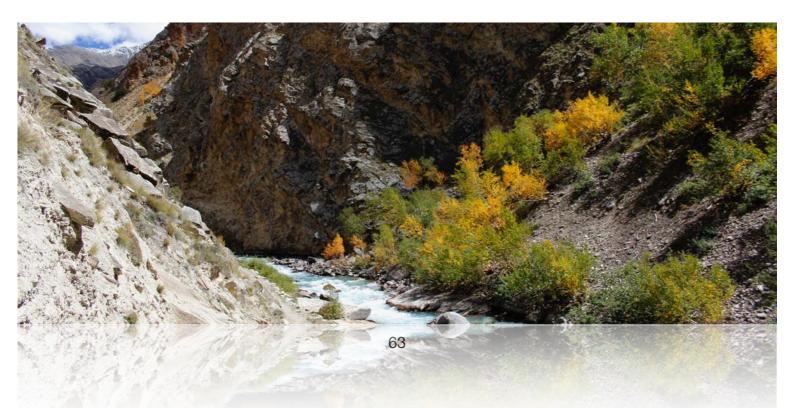
Not only does the Holy Spirit give us the power to obey God's commands and to be His witnesses, but does many other things for the followers of Jesus:

- The Holy Spirit is our helper (John 14:16)
- The Holy Spirit dwells in you (Romans 8:9)
- The Holy Spirit produces good fruit in your life (Galatians 5:22-23)
- Teaches us all things and leads us into all truth (John 14:26 and 16:12)
- Gives special abilities to followers of Jesus (1 Corinthians 12:7-11)

है। ह्रेश्वास्त्रीत् क्ष्यास्त्रीत् क्ष्यास्य क्ष्यास्य क्ष्यास्त्रीत् क्ष्यास्त्रीत् क्ष्यास्त्रीत् क्ष्यास्य क्ष्यास्त्रीत् क्ष्यास्त्रीत्

The gift of the Holy Spirit is a very good gift! Jesus has kept His promise and disciples today have the Holy Spirit living inside of them. Our bodies are temples of the Holy Spirit (1 Corinthians 6:19).

If you are studying this together in a group, this is a good place to stop. Make a plan for your group to meet again soon and study the conclusion together.



यह्गः क्र्या

भूरायात्रम् द्वात्रम् व्यात्रम् व्याप्तम् व्याप्तम् व्याप्तम् विष्णायाः म्वाप्तम् विष्णायाः स्वाप्तम् स्वापत्तम् स्

Conclusion

The Great Commandment and Great Commission are both very important. They are the commands that Jesus has given us, and together they are a guide for our lives. Look at the picture below and consider how these commands fit together.



र्गोव सक्वाये गुराय सम्प्राय

Love God

ম্নেশি ট্রিমামর্ক্তমানী শান্তমার্মী শ্রীমা Love your neighbor





चगायः तो तुव सापव गुः ह्यें च सा तो ङ्गें या विवा

Make disciples who obey

र्श्वन्यः भूष्यः श्रीत्रः श्रीत्रः भूष्यः विद्याः विद

It all starts with the first of the greatest commandments - to love God. When we truly love God, then we will begin to love our neighbor truly. When we genuinely love our neighbors, then we want them to become obedient disciples of Jesus. We then teach them to love God, love their neighbors, and make disciples who obey.

This cycle is continuing today. More and more people are coming into the Kingdom of God. They are being taught to love God, love people, and make disciples who obey. God is accomplishing his plan!

ण. शुक्ष न् गॅवि अर्ळिण वी कुया प्यत्य नि स्थित वि वि स्था ने स्था ने स्था ने स्था प्यत्य ने स्था वि स्था ने स्था प्यत्य प्राप्त ने स्था वि स्था ने स्था प्राप्त ने स्था वि स्था ने स

- 1. ब्रिंद्गीश्चर्मेव्यळेंग्गी कुलावनगी क्रेंद्राचित्र के स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्
- 2. ठेमी प्रमान कुरिया प्रमुख के प्रमान कुर दिने क्रिया प्रमान कि स्वर्थ प्रमान के प्रमान कि स्वर्थ प्रमान के प्रमान कि स्वर्थ प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्र
- 3. तुःगुःगुरुष्येमान्द्ये वदे स्वीःम्बद्धाः स्वीः मुर्वाः मुर्वाः मुर्वाः स्वीः मुर्वाः स्वीः मुर्वाः स्वीः मुर्वाः स्वीः मुर्वाः स्वीः मुर्वाः स्वीः स्वीः मुर्वाः स्वीः स्वी

Jesus told two short parables to explain how the Kingdom of God grows. "Then Jesus asked, "What is the kingdom of God like? What shall I compare it to? It is like a mustard seed, which a man took and planted in his garden. It grew and became a tree, and the birds perched in its branches."

Again he asked, "What shall I compare the kingdom of God to? It is like yeast that a woman took and mixed into about sixty pounds of flour until it worked all through the dough." (Luke 13:18–21).

Read those two parables one more time and discuss the following questions:

- 1. What do you learn about the kingdom of God from these two parables?
- 2. How do the Great Commandment and Great Commission relate with these two parables?
- 3. Who can you share these parables with?

The Great Commandment is a short and simple teaching. The message is not complicated: love God and love people. However, that simple message is powerful. Jesus said that "All the Law and the Prophets hang on these two commandments." (Matthew 22:40). That means all of the other commandments are dependent on these two simple, short commandments.

न्म्यायक्ष्मान्निः क्रियायन् ग्रीः यस्याद्वेतः स्वादेतः स्वादेतः

Then, later, Jesus gives His Great Commission to eleven ordinary men that had their doubts. After all the teaching, incredible miracles, and large crowds of people who fought to get close to him and touch him, He commissions eleven imperfect men to change the whole world.

The Kingdom of God works differently than the powers and authorities on earth. A tiny seed or a small amount of yeast may not seem to be very powerful when you first see them, but a tiny seed becomes a large tree, and a little yeast can completely change a large amount of flour. Jesus says the Kingdom of God is like those things.

म् २,००० ह्यामे विश्वस्तात्वी न्या स्वाप्तात्वी न्या स्वाप्तात्वा न्या स्वाप्तात्वा स्वाप्तात्व स्वाप्तात्वा स्वाप्तात्व स्वाप्त

2,000 years later, Jesus' Great Commandment to love is still the most comprehensive moral teaching. The Great Commision that started with only eleven disciples has grown to billions of disciples today. Now, you have been given both of these life-changing Scriptures. I pray that you will be obedient to them, and teach others to do the same.





www.dolpotibetan.com